1857

के दहकते अंगारे

अवध के क्राँतिकारी तालुकेदार



सरनाम सिंह

ठाकुर दरियाव सिंह

क्रौंतिकारी तालुकेदार

खागा, फतेहपुर

"दरियाव सिंह प्रसिद्ध क्रौंतिकारी–स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने कानपुर के बिठूर के नाना साहब पेशवा के नेतृत्व में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिये क्रौंति का संचालन किया था। उन्हे खागा और फतेहपुर के सरकारी खजाने को 8 और 9 जून 1857 को लूटने और फूकने के अभियोग में 6 मार्च 1858 को फाँसी पर लटका दिया गया था।"1

दरियाव सिंह जनपद फतेहपुर के तालुका खागा के क्रौंतिकारी तालुकेदार थे, जिन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 में खुलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा था। उनके नेतृत्व में पूरा जनपद अंग्रेजों के विरोध में खड़ा हो गया था, जिसके कारण 32 दिन तक जनपद फतेहपुर से अंग्रेजी सत्ता समाप्त हो गई थी। सम्पूर्ण जनपद दासता से मुक्त होकर स्वतंत्र हो गया था। जिले के अंग्रेज अफसर डर कर अपनी जान बचाने के लिये लुक–छुपकर रात में दूसरे जिलों को भाग गये थे। जनपद की शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की आम जनता ने दरियाव सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजी सत्ता को ठुकरा दिया था। यद्यपि अंग्रेज अफसर और उनके कर्मचारी सब मिलकर इनसे जूझ रहे थे, परन्तु पार नहीं पा रहे थे। जिले का कलेक्टर जे0 डब्लू0 शेरर डर कर आधी रात को सबको साथ लेकर जमुना पार करके बाँदा भाग गया था। उसने फतेहपुर जिले की उस समय की सही स्थिति का वर्णन करते हुये लिखा कि "अंग्रेज तो शहरों में अपने अधिकार लिये बैठे हैं, पर व्यवहार में गाँवों की जनता ने उसे अस्वीकार कर दिया है। लगता है कि जनता विद्रोह हो गया है, लोगों में घोर उत्तेजना है।"2

फतेहपुर की स्थापना :–

प्रदेश में फतेहपुर नाम के कई गाँव, कई परगने और कई तहसीलें हैं, जिनकी संख्या 96 हैं, परन्तु फतेहपुर नाम का कोई जिला नहीं है। आगरा जिले में फतेहपुर सीकरी और बाराबंकी जिले में फतेहपुर नाम की तहसीलें है। फतेहपुर जिला की अलग पहचान बनाने के लिये अकबर काल से इसका नाम फतेहपुर हसुआ कहा जाता था। फतेहपुर नाम से प्रतीत होता है कि किसी मुस्लिम शासक ने यहाँ पर फतह पाकर उसकी स्मृति मे फतेहपुर नाम की बस्ती बसाई थी। इस सम्बन्ध में फतेहपुर के सन् 1850 के तत्कालीन तहसीलदार दलेल हुदा साहब की रिपोर्ट बताती

---

1. जिला गजेटियर फतेहपुर 1980, पृष्ठ 250
2. जे0डब्लू0 शेरर, डेली लाइफ ऑफ दि म्यूटिनी, पर्सनल एक्सपीरियन्स ऑफ 1857, पृष्ठ 5

है कि "पन्द्रहवी शताब्दी के प्रथम चरण में यहाँ पर आठ किलों के स्वामी राजा सतानन्द का राज था, जिन्हे अठगढ़ियाँ का राजा कहा जाता था। सन् 1406–07 में जौनपुर के सुल्तान इब्राहिम शर्की ने उनपर चढ़ाई करके फतह पाकर यहाँ फतेहपुर नाम की बस्ती बसाया था।"[1]

कुछ लोग बंगाल के शासक सुल्तान जलालुद्दीन को, कुछ लोग फतेहमद खान फौजदार को इसका संस्थापक मानते हैं, परन्तु कोई लिखित साक्ष्य न होने के कारण इसे स्वीकार नही किया गया है।

यह क्षेत्र अत्यंत प्राचीन है। गंगा नदी के आगमन के पूर्व यहाँ भिटौरा में भृगु ऋषि का आश्रम था, जिन्होंने गंगा की धारा को पूरब की ओर मोड़ दिया था, जो आज भी चार–पांच कि0मी0 उत्तर की ओर बहती है। देवताओं के बैद्य अश्वनी कुमार की तपस्थली यहीं असनी में थी। यही पर गाधि पुत्र विश्वामित्र का राज्य था। मध्य काल में यह क्षेत्र कन्नौज शासको के अधीन था। "जयचंद ने असनी और हथगाँव में अपने किले बनवाकर अपना खजाना असनी के किले में छिपा रखा था, कड़ा उनके साम्राज्य का प्रमुख केन्द्र था।"[2]

मुस्लिम काल में "मोहम्मद गोरी यहाँ आकर असनी में जयचन्द का खजाना लूटा और हथगाँव में जयचंदी मस्जिद बनवाई, जो उत्तर भारत में पहली मुस्लिम मस्जिद थी।"[3] सन् 1659 में औरंगजेब का अपने भाई शुजा से और सन् 1712 में फरूखशियर का जहाँदार के पुत्र अजउद्दीन से यही के खजुहा मे युद्ध हुआ था। "सन् 1735 में यहाँ के शासक भगवंत राय खीची को अवध के सूबेदार ने पराजित करके मार डाला और इस इलाके को अवध सूबे में मिला लिया था।"[4]

अंग्रेजों का प्रवेश सन् 1764 में बिहार के बक्सर युद्ध के बाद नवाब शुजाउद्दौला से सन् 1765 में हुई संधि के पश्चात् हुआ, "जिसमें इलाहाबाद और फतेहपुर जिले के कड़ा इलाके अंग्रेजों को सौंप दिये गये थे।"[5]

इसके 36 वर्ष बाद सन् 1801 ई0 में अंग्रेजो ने अवध के नवाब सआदत अली से जबरदस्ती सहायक संधि करके फतेहपुर के साथ गोरखपुर से लेकर रूहेलखण्ड तक के अठारह जिले ले लिये थे। उस समय इसका क्षेत्र कानपुर और इलाहाबाद के दो जिलों में विभाजित था, "जिसके प्रशासन के लिये सन् 1814 ई0 में यहाँ के भिटौरा को मुख्यालय बनाकर एक ज्वाइंट मजिस्ट्रेट की नियुक्ति की गई।"[6]

1. तहसीलदार फतेहपुर की 2 नवम्बर 1850 की रिपोर्ट एवं फतेहपुर भू–बंदोबस्त 1884, पृष्ठ 110
2. एच0आर0 नेविल जिला गजेटियर फतेहपुर 1906, पृष्ठ 168
3. एस0बी0पी0 रशीदुल्ला, मुस्लिम रूल इन इंडिया (1961ई0), पृष्ठ 50–51
4. आशीर्वाद लाल श्रीवास्तव, अवध के प्रथम दो नवाब, पृष्ठ 50–51
5. सुंदर लाल, भारत में अंग्रेजी राज, पृष्ठ 234–240
6. जिला गजेटियर फतेहपुर 1980 ई0, पृष्ठ 31

परन्तु प्रशासनिक कठिनाईयाँ आने के कारण 10 नवम्बर 1826 ई– को फतेहपुर को मुख्यालय बना कर जिला बना दिया गया।

फतेहपुर से कानपुर पश्चिम में 77 कि0मी0 पर और इलाहाबाद पूरब में 118 कि0मी0 पर है। इसके उत्तर मे गंगा नदी पार उन्नाव और रायबरेली तथा दक्षिण में जमुना पार बाँदा और हमीरपुर जिले हैं। गंगा और जमुना नदियों के मध्य में होने के कारण इसे दोआबा क्षेत्र कहा जाता है। इस जिले से राष्ट्रीय मार्ग संख्या दो जी0टी0 रोड निकलता है, जो कानपुर और इलाहाबाद को जोड़ता है। मुगल सराय से दिल्ली जाने वाले उत्तर रेलवे का फतेहपुर स्टेशन है।

खागा तालुका की स्थापना:–

स्थानीय मान्यता के अनुसार "ठाकुर दरियाव सिंह के पूर्वज खड़ग सिंह द्वारा खागा बसाया गया था।"1 उन्होंने पन्द्रहवी शताब्दी के प्रारम्भ में सन् 1406–07 के आसपास अपने नाम से खागा को बसाकर अपना तालुका स्थापित किया था। इसके पहले यहाँ भर शासक का राज था, जो यहाँ से दक्षिण पश्चिम में 3–4 कि0मी0 दूर कुकरा–कुकरी नामक स्थान पर रहता था, जिस पर होली के दिन खड़ग सिंह ने चढ़ाई करके उसे मार डाला और अपने नाम से खागा बसाया।

तेरहवीं और चौदहवी शताब्दी मे अवध के कई जिलों बहराइच, बाराबंकी, लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, फतेहपुर, इलाहाबाद और मिर्जापुर में भर जाति के लोग बहुत बड़ी संख्या में रहते थे। खागा से पश्चिम 7 कि0मी0 के गाँव भरखना"2 (भरों की खान अर्थात अधिकता) इलाहाबाद तहसील के भरवारी"3 (भरो की बाड़ी अर्थात निवास) तथा बैसवारा के संस्थापक त्रिलोकचंद के जन्मस्थान रायबरेली–उन्नाव की सीमा के गाँव कोटमर"4 (भर का कोट या किला) इसके उदहारण है। रायबरेली सेटेलमेंट रिपोर्ट 1867 पृष्ठ 5 के अनुसार "बैसों के अगमन से पहले बक्सर क्षेत्र में भरों की प्रधानता थी।" भरों का शासन बहराइच के बभनौटी (बौड़ी), बाराबंकी के रामनगर, रायबरेली के डलमऊ और भरौली तथा फतेहपुर के असनी और कोट एवं कुकरा–कुकरी में स्थापित था। ये भर हिमालय की तराई से यहाँ आये थे। बिलियम क्रुक्स ने इनकी "जाति पासी या अरख बताई है।"5 सन् 1974 के जिला गजेटियर रायबरेली के पृष्ठ 26 के अनुसार डलमऊ से 3–4 किमी0 पर एक गाँव पखरौली है, जहाँ भर शासक डल और बल की मूर्तिया स्थापित है, जिनकी पूजा स्थानीय अहीर करते है, वे अपने को भरौतिया अहीर बताते है। हिमालय की तराई से आने वाले भर दूसरी–तीसरी शताब्दी के मारशिवों से बिल्कुल अलग और भिन्न थे।

1. जिला गजेटियर फतेहपुर 1980, पृष्ठ 250
2. डा0 ओमप्रकाश अवस्थी, प्रधान सम्पादक, अनुबाक, पृष्ठ 108
3. जिला गजेटियर इलाहाबाद 1911, पृष्ठ 230
4. अवध गजेटियर 1877–78 भाग तीन, पृष्ठ 225
5. बिलियम क्रुक्स, दि ट्राइब्स एण्ड कस्टमस ऑफ नार्थ वेस्ट प्राविन्सेस एण्ड अवध (1986ई0), खण्ड दो, पृष्ठ 35

डा0 काशी प्रसाद जायसवाल ने इन भरों को भारशिव नही माना है। उन्होंने भारशिवों को नागवंशीय क्षत्रिय बताया है, जो शिव उपासक और नाग सम्प्रदाय के अनुयायी थे।"[1]

भर शासकों के राज्य या शासन बाहर से आये अधिकांश क्षत्रियों द्वारा छीन लिये गये, कुछ मुस्लिम शासकों द्वारा भी कब्जा कर लिये गये। "रायबरेली के डलमऊ के डल और भरौली के बल भर शासकों पर सन् 1406 में जौनपुर के सुल्तान इब्राहिम शर्की ने होली के दिन हमला करके मार डाला और अपना शासन स्थापित कर लिया।"[2] उसके पश्चात "सुल्तान शर्की गंगापार करके इस क्षेत्र के आठ किलों के स्वामी अठगढ़ियों के राजा सतानन्द पर हमला करके फतह पाकर यहाँ पर फतेहपुर नाम की बस्ती बसाया।"[3] इसी समय खड़ग सिंह ने कुकरा–कुकरी के भर शासक को मार कर खागा की स्थापना की थी। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि डलमऊ और कुकरा–कुकरी के भर शासक एक समय में थे, जिनका विनाश भी एक ही समय में एक साथ हुआ था और यह भी स्पष्ट हो जाता है कि फतेहपुर बस्ती और खागा तालुके की स्थापना आगे–पीछे एक ही समय में हुई थी।

"सन् 1852 में अंग्रेजों ने खागा को तहसील बना दिया"[4] और "सन् 1927 में दो राजस्व गाँवों शहजादपुर खागा और बहादुर पुर खागा को मिलाकर उसे टाउन एरिया बनाया गया।"[5] इसके मध्य से जी0टी0 रोड और एक कि0मी0 दक्षिण में मुलगसराय से दिल्ली की रेलवे लाइन गुजरती है, जिसका स्टेशन खागा ही है। इसके पूरब में 83 कि0मी0 पर इलाहाबाद और पश्चिम में 112 कि0मी0 पर कानपुर है। यहां से दक्षिण–पश्चिम में 35 कि0मी0 पर जिला मुख्यालय फतेहपुर है।

वंश परिचयः–

"सिगरौरों ने दरियाव सिंह के नेतृत्व में क्रांति के समय जिला फतेहपुर में (अंग्रेजों को) बहुत कष्ट पहुँचाये'।"[6] सन 1857 के नायक दरियाव सिंह को विलियम क्रुक्स ने सिंगरौर क्षत्रिय लिखा है, उन्होंने उत्तर–पश्चिम सूबों तथा अवध सूबे की जातियों और परम्पराओं के विषय में विस्तार से लिखा है। उन्होंने फतेहपुर जनपद के सिंगरौर और गौतम क्षत्रियों के वंशों का भी उल्लेख करके "फतेहपुर के अरगल राजा गौतम की शादी कन्नौज के गहरवार राजा जयचन्द की बहिन से होना लिखा है"।"[7]

---

1. डा0 काशी प्रसाद जायसवाल, अंधकार युगीन भारत, पृष्ठ 61, 14, 15
2. जिला गजेटियर रायबरेली 1974, पृष्ठ 25
2. फतेहपुर मुवंद्रोबस्त 1884, पृष्ठ 110
4. जिला गजेटियर फतेहपुर 1980, पृष्ठ 250
5. जिला गजेटियर फतेहपुर 1980, पृष्ठ 250
6. विलियम क्रुक्स, दि ट्राइब्स एण्ड कास्टस ऑफ नार्थ वेस्ट प्राविन्सेस एण्ड अवध (1896ई0) खण्ड दो
7. विलियम क्रुक्स, दि ट्राइब्स एण्ड कास्टस ऑफ नार्थ वेस्ट प्राविन्सेस एण्ड अवध (1896ई0) खण्ड दो

क्षत्रिय वंशों में लड़कियों की शादी अपने उच्च वंशीय परिवार में करने की परम्परा है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि गौतम वंश गहरवार वंश से उच्च था। दरियाव सिंह का ननिहाल और ससुराल दोनों गौतम वंश में थी, इसलिये सिगरौर वंश गौतम वंश से उच्च था।

दरियाव सिंह के पूर्वज इलाहाबााद से 37 कि0मी0 उत्तर–पश्चिम में गंगा किनारे 'सिगरौर''1 स्थान (वर्तमान कौशाम्बी जिला) से जिला फतेहपुर के सरसई गाँव आये थे, इनका मूल स्थान राजस्थान था। परन्तु राजस्थान से कब और कहाँ से आये, इसका लिखित प्रमाण नहीं मिलता है। मध्यकाल की तेरहवी–पन्द्रहवी शताब्दी में समय–समय पर बाहर से विदेशी मुसलमान आक्रांता राजस्थान और गुजरात के इलाकों पर हमला करके स्थापित हो गये। इन सूबों की सीमा बाहरी देशों से मिली होने के कारण मुसलमानों का यहाँ आना सरल था। इनकी ज्यादितियों एवं दुर्व्यवहार से त्रस्त होकर यहाँ के मूल वासिंदा, जिसमें अनेक क्षत्रिय वंश भी थे, समूहों में आकर अवध के विभिन्न इलाकों में स्थापित हो गये। इन्हीं समूह में से एक समूह राजस्थान से आकर सिगरौर पहुंचा, जिसमें कई वंश और गोत्र के क्षत्रिय सम्मिलित थे। उस समय राजस्थान और गुजरात से आने वाले प्रमुख क्षत्रिय वंश थेः–

कलहंसः– ''राजस्थान के मेवाड़ के चितौड़गढ से गहलौत गोण्डा आकर अपने पूर्वज कालभोज और दादी हंसाबाई के नामों के काल और हंस को मिलाकर कलहंस हो गये। गहलौत मूलरूप से लववंश के सूर्यवंशी थे। पहाड़ की गुफा में जन्म लेने के कारण 'गुहा' या 'गुहादित्य' कहा जाने लगा, जो बदलकर गहलौत हो गया।''2

जागड़ाः– ''राजस्थान के अजमेर से चौहान लखीमपुर–खीरी के धौरहरा तालुके आये, जहां 'जंग अंगेज खाकनी राजा' की उपाधि पाई, उसी उपाधि के नाम से जागड़ा हो गये।''3

जनवारः– ''जनवार मूलतः चन्द्रवंशी हैं, जो गुजरात के पावागढ़ राज्य के जनवाड़ा से बहराइच आकर जनवाड़ा से आने के कारण जनवार हो गये।''4

अहबनः– ''अहबन मूलरूप से चवर क्षत्रिय हैं, जो गुजरात के बल्लभी राज्य से अनहलबाड़ा चले आये थे, वहां से सीतापुर और लखीमपुर आकर अनहलबाड़ा से आने के कारण अहबन हो गये।''5

रैक्वारः– ''रैक्वारों का मूल वंश सूर्यवंशी हैं, जो जम्मू के रायका से आने के कारण बहराइच में रैक्वार हो गये। ''6

1 जिला गजेटियर इलाहाबाद 1968 ई0, पृष्ठ 33
2 अवध गजेटियर 1877–78, भाग–एक, पृष्ठ 568–69
3 जिला गजेटियर लखीमपुर खीरी 1905 ई, पृष्ठ 85–86
4 जिला गजेटियर बहराइच 1903 ई0, पृष्ठ 122
5 अवध गजेटियर 1877–78, भाग–दो, पृष्ठ 237
6 अवध गजेटियर 1877–78, भाग–एक, पृष्ठ 285

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि क्षत्रियों के मूल स्थान बदलने पर उनके वंश बदलकर उसी नाम से हो जाते थे, जिस स्थान से वे आते थे। दरियाव सिंह के पूर्वज राजस्थान से पहले सिगरौर आये, फिर वहाँ से जिला फतेहपुर के गांव सरसई चले आये। इनके साथ राजस्थान से आने वाले अलग–अलग वंश और गोत्र के क्षत्रिय भी सिगरौर से कई स्थानों पर जाकर स्थापित हो गये। जिन सभी को सिगरौर वाले कहकर पुकारा जाने लगा, जो कालान्तर में उनकी पहिचान बनकर उनका वंश सिगरौर हो गया। परन्तु उनके गोत्र नहीं बदले। अलग–अलग गोत्र होने पर भी सिगरौर से आने के कारण सभी सिगरौर क्षत्रिय कहे जाते थे। इन अनेक गोत्रों में विभाजित सिगरौर क्षत्रियों की शादियां सिगरौरों में अलग–अलग गोत्रों में की जाने लगी, जो वर्तमान में भी प्रचलित हैं। ये राजस्थान से आने वाले क्षत्रिय समूह वैसे ही सिगरौर कहे जाने लगे, जैसे जनवाड़ा से आने वाले जनवार, अनहलबाड़ा से आने वाले अहबन और रायका से आने वाले रैक्वार कहे जाने लगे, बाद में वही उनके वंश हो गये। यह परम्परा क्षत्रियों के अलावा ब्राह्मणों में भी पाई जाती है। पंडित जवाहर लाल नेहरू के पूर्वज कश्मीर से आकर दिल्ली में नहर किनारे रहने के कारण नेहरू कहकर पुकारे जाने लगे, जो बाद में उनकी पारिवारिक पहिचान बनकर उनका वंश हो गया। इसी भाँति सरयूपार से आने वाले ब्राह्मण सरयूपारी और कन्नौज से आने वाले ब्राह्मण कान्यकुब्ज कहे जाते है।

आज का सिगरौर त्रेतायुग का श्रृंगवेरपुर था, जिसे श्रृंगी ऋषि का आश्रम बताया जाता है, वैसे इनका आश्रम बिहार के जिला लखीसराय में क्यूल रेलवे जक्शन से आगे कजरा रेलवे स्टेशन से चार–पांच कि0मी0 दूर श्रृंगी पहाड़ पर होना माना जाता है। वहाँ से कुछ ही दूर पर गंगा नदी बहती है। राजा दशरथ ने पुत्र प्राप्ति यज्ञ हेतु श्रृंगी ऋषि को बुलाया था। तुलसीकृत रामायाण में लिखा है कि :

"सृंगी रिषिहि वशिष्ठ बुलावा। पुत्र काम शुभ यज्ञ करावा।।"

(बालकाण्ड दोहा–189)

रामायण से यह भी ज्ञात होता है कि राम बनगमन के समय श्रृंगवेरपुर पहुँचे थे।

"सीता सहित दोउ भाई। सृंगवेरपुर पहुंचे जाई।।"

(अयोध्या काण्ड, दोहा–87)

परन्तु राम के श्रृंगी ऋषि आश्रम जाने या उनसे मिलने का उल्लेख नहीं है, केवल केवट की नाव से गंगा पार उतरने का वर्णन है। इससे प्रगट होता है कि श्रृंगी ऋषि वहां नहीं थे, वरना राम बिना उनसे मिले नहीं जाते। क्योंकि वे अपने बन गमन के रास्ते में पड़ने वाले सभी ऋषियों के आश्रम जाकर उनसे अवश्य मिले थे। हो सकता है कि श्रृंगवेरपुर में श्रृंगी ऋषि का आश्रम रहा ही न हो क्योंकि यहाँ वर्तमान में इसके कोई चिन्ह नहीं मिलते हैं और न वहाँ किसी स्थान विशेष को श्रृंगी ऋषि का आश्रम होना बताया जाता है। जबकि केवट के निवास स्थान के प्रमाण मिल

सिंह और देव सिंह थे, जिनकी शादियाँ भी रायबरेली जिले के गौतम वंश में ही हुई थी। इनके एक भाई निर्मल सिंह थे, जो निःसंतान थे।

दरियाव सिंह का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक और प्रभावशाली था। बड़ी–बड़ी लाल डोरेवाली आँखे, चमकता मुख, विशाल वक्षस्थल, ऊँचा कद, सिर पर बंधी हुई लटे, गले में रूद्राक्ष की माला और दहिने लटकती हुई तलवार उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगाती थी। ये बड़े शक्तिशाली पराक्रमी और वीरपुरूष थे। इनमें राजनैतिक सूझ–बूझ और चातुर्य के साथ संगठन क्षमता अद्वितीय थी, इनमें स्वाभिमान कूट–कूट कर भरा था। ये शक्ति के साथ भक्ति के उपासक भी थे। इन्होंने दुर्गा मंदिर और हनुमान मंदिर बनवाकर नित्य उनकी पूजा करते थे। ऐसा बताया जाता है कि पूजा करते समय उनकी तलवार स्वतः जमीन से एक हाथ ऊपर उठ जाती थी। इनके द्वारा साधू संतों का आदर सत्कार बड़ी निष्ठा से किया जाता था। एक बार साधुओं का एक दल हरिद्वार से इलाहाबाद कुंभ स्नान करने जाते समय इनके यहाँ रूका। उसका खूब स्वागत किया और उनकी इच्छानुसार पूड़ी का छिलका दूध के साथ कई दिनों तक खिलाया। दल के महंत ने जाते समय इनको एक गुदड़ी देकर कहा कि इसे अलग सुरक्षित रखना और आवश्यकता पड़ने पर जितना धन चाहे, इसमें हाथ डालकर निकाल लेना। इनके परिवार में गुदड़ी का आज भी सम्मान होता है। गुदड़ी पर न कोई बैठता है और न कोई लेटता है।

खागा की गढ़ीः–

एक छोटे–मोटे किला के समान इनकी गढ़ी थी, जो बहुत मजबूत और सुरक्षित थी, उसकी मोटी–मोटी दीवाले बालू से भरी हुई थी, जिसके चारों ओर पानी की गहरी खाई थी। गढ़ी में सात पक्के कुएं और एक बड़ा कुआ इंदारा था। इसके अंदर एक बड़ा गोल पक्का चबूतरा पहलवानों की पहलवानी के लिये बना था। इस गढ़ी को 1857 की क्रौंति मे मेजर रेनाल्ड ने 11 जुलाई 1857 को धरासाई करके मटियामेट कर दिया था, जिसके अवशेष आज भी विद्यमान है। वहीं पर दरियाव सिंह की मूर्ति लगाकर उनका स्मारक बनाया गया है।

क्रौंति में भागीदारीः–

ठाकुर दरियाव सिंह के द्वारा की गई क्रौंति ही फतेहपुर की क्रौंति है, जो उनके द्वारा प्रारम्भ की गई और पूरे जिले में फैल गई, उनसे पूरे नौ महीने अंग्रेज जूझते रहे, पर उनको न रोक पाये और न झुका पाये, बल्कि उन्होंने अंग्रेजों को जिले भर में हर जगह कड़ी टक्कर देकर नाकों चने चबुआ दिये। अंग्रेज लेखक बिलियम क्रुक्स ने उनके सम्बन्ध में लिखा है कि "क्रौंति के समय दरियाव सिंह के नेतृत्व में सिगरौरों ने फतेहपुर जिले में (अंग्रेजों को) बहुत कष्ट पहुँचाया"
क्रौंति में उनको सहयोग और साथ देने वाले प्रमुख क्रौंतिकारी थेः–

है, जिसकी पुरातत्व विभाग ने खुदाई करके पता लगाया है, उसके भवन के चिन्ह मिले हैं, जिनको लेखक ने स्वयं जाकर देखा है। यह भी सम्भव है कि श्रृंगबेर पुर का नाम श्रृंगी से न होकर किसी अन्य नाम से हो।

इससे इतना तो स्पष्ट है कि त्रेतायुग में श्रृंगवेरपुर नाम का स्थान था, जो कलयुग में बदलकर सिगरौर हो गया, जहाँ ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी में दरियाव सिंह के पूर्वज राजस्थान से आकर स्थापित हुये थे। सिगरौर में आकर रहने पर कुछ लोग भ्रमवस इन्हें श्रृंगी ऋषि से जोड़कर उनकी संतान बताने लगे, जिसका कोई औचित्य नहीं है और न यह सही प्रतीत होता है। इसके प्रमुख तीन कारण है :

एक:– श्रृंगी ऋषि त्रेता युग में हुये थे, जबकि दरियाव सिंह के पूर्वज कलयुग में ईसा की पन्द्रवही शताब्दी में राजस्थान से सिगरौर आये थे।

दो:– त्रेतायुग में क्षत्रियों के केवल दो वंश सूर्यवंश और चन्द्रवंश का उल्लेख मिलता है, जिनकी बाद में कई उपशाखायें हो गई, मगर इन उपशाखाओं में सिगरौर वंश का उल्लेख नहीं हैं

तीन:– श्रृंगी ऋषि ब्राहमण थे, जबकि सिगरौर क्षत्रिय हैं।

इन तथ्यों के आधार पर सिगरौर क्षत्रियों को श्रृंगी ऋषि की संतान बताना मेरे मत से तर्क संगत और सही नहीं प्रतीत होता है। यह तथ्यपरक नहीं है और प्रमाण रहित भ्रम पर आधारित धारणा है। केवल सिगरौर से आने के कारण इस समूह के विभिन्न गोत्र के क्षत्रिय सिगरौर कहे जाने लगे, जो बाद में कई स्थानों पर जाकर रहने लगे, जिनके गोत्र अलग–अलग बने रहे, मगर उनकी पहचान सिगरौर ही रही, बाद में उन सभी का वंश सिगरौर हो गया।

वंशावली :–

दरियाव सिंह से आठ पीढ़ी पहले बाबूराय के बाद की वंशावली प्राप्त है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी का अन्तराल 30 वर्ष माना जाता है। दरियाव सिंह का जन्म सन 1795 ई0 में हुआ था। इस प्रकार 8×30 = 240 वर्ष पूर्व अर्थात सन् 1555 ई0 में बाबूराय हुये थे। इससे सौ डेढ़ सौ वर्ष पूर्व इनके पूवर्ज राजस्थान से सिगरौर आये थे। जहाँ दो–तीन पीढ़ी रहकर वहाँ से जिला फतेहपुर के सरसई गाँव चले आये अर्थात 1555–90= 1465 ई0 में सरसई आ गये, जहाँ तीन पीढ़ी (90 वर्ष) बाद सन् 1375 ई0 में खड़ग सिंह पैदा हुये, जिन्होने सन 1406 ई0 में अपने नाम से खागा बसाकर अपना तालुका स्थापित किया।

व्यक्तित्वः–

दरियाव सिंह का जन्म सन् 1795 में खागा में हुआ था। इनका वंश सिगरौर क्षत्रिय और गोत्र वत्स था। इनके पिता मर्दन सिंह खागा के तालुकेदार थे और माता गौतम वंश की इसी जिले के बुदवन ग्राम की थी। इनकी पत्नी का नाम सुगंधा था, जो रायबरेली के सरेनी ग्राम के गौतम वंश की थी। "1 जिनसे दो पुत्री एवं दो पुत्र सुजान

1. डा0 वासुदेव सिंह, बैसवाड़ा का इतिहास (1997ई0), पृष्ठ 306

1. पथ प्रदर्शक और नेता –

नाना साहब पेशवा 32 वर्ष, बिठूर, कानपुर–लड़ते लड़ते बेगम हजरत महल के साथ नेपाल चले गये।

2. साथी एवं सलाहकार–

(अ) राना बेनी माधव सिंह 80 वर्ष, शंकरपुर, रायबरेली–लड़ते –लड़ते बेगम हजरत महल के साथ नेपाल चले गये।

(ब) राव रामबख्श सिंह, 50 वर्ष, डौडिया खेड़ा, उन्नाव– फाँसी दी गई ।

3. जनपद के सहयोगी –

(अ) हिकमत उल्ला खाँ 50 वर्ष, ब्रिटिश सरकार के डिप्टी कलेक्टर–अंग्रेजों ने फतेहपुर में सर काट लिया।

(ब) जोधा सिंह, अटैया रसूलपुर, तहसील बिंदकी–बावनी इमली पर फाँसी दी गई।

(स) शिवदयाल सिंह रघुवंशी 42 वर्ष, जमरौंवा, तहसील फतेहपुर– फाँसी दी गई।

(द) बाबा गयादीन दुबे 56 वर्ष, कोराई, तहसील फतेहपुर–जेल में आत्महत्या कर ली।

(छ) महराज सिंह, रामपुर बहुर, तहसील फतेहपुर– अंग्रेज पकड़ न पायें– अज्ञात रहे।

4. परिवार के सहयोगीः–

1. सुजान सिंह 40 वर्ष, दरियाव सिंह के ज्येष्ठ पुत्र, दरियाव सिंह के साथ फाँसी दी गयी।
2. निमर्ल सिंह 56 वर्ष, दरियाव सिंह के अनुज–दरियाव सिंह के साथ फाँसी दी गयी।
3. बख्तावर सिंह 39 वर्ष, दरियाव सिंह के चचेरे भतीजे–दरियाव सिंह के साथ फाँसी दी गयी।
4. रघुनाथ सिंह 37 वर्ष, दरियाव सिंह के चचेरे भतीजे–दरियाव सिंह के साथ फाँसी दी गयी।
5. सुरंग सिंह 40 वर्ष, दरियाव सिंह के चचेरे भतीजे–दरियाव सिंह के साथ फाँसी दी गयी।
6. बहादुर सिंह 59 वर्ष, दरियाव सिंह के चचेरे भाई–युद्ध में वीरगति प्राप्त।
7. अवधूत सिंह, दरियाव सिंह के चचेरे भतीजे–युद्ध में वीरगति प्राप्त।

5. क्रांति प्रारम्भः–

29 मार्च 1857 को कोलकाता की बैरकपुर छावनी में अवधवासी बलिया निवासी मंगल पाण्डेय ने अंग्रेजों पर पहली गोली चलाकर क्रांति का श्री गणेश कर दिया। 10 मई को मेरठ छौंवनी फूंक कर अंग्रेजों का सफाया करके दिल्ली जाकर बहादुर शाह जफर को हिन्दुस्तान का बादशाह घोषित कर दिया। 30 मई को लखनऊ की मड़ियाव छावनी धू–धू कर जल उठी। जिसकी लपटें दस दिन में पूरे अवध में अंग्रेजी सत्ता को स्वाह कर दिया।

अंग्रेज लेखक फारेस्ट ने लिखा कि "इस तरह दस दिन में ही अवध से अंग्रेजी राज सपने की तरह मिट गया। उसका कोई निशान तक बाकी न रहा।"[1] इस पर इतिहासकार जे0 डब्लू0 के ने लिखा कि "नई सरकार ताश के पत्तों से बने भवन की तरह ढह गई"[2]। इसका प्रभाव अवध के पड़ोसी जिलों पर भी पड़ा। कानपुर, उन्नाव में 4 जून को और इलाहाबाद में 7 जून को क्रौंति प्रारम्भ हो गई, इस परिस्थिति में दोनों के मध्य खागा और फतेहपुर भला कैसे अछूते रह सकते थे।

खागा–8 जून 1857, दिन सोमवारः–

अभी तक खागा सहित पूरा जिला फतेहपुर शौंत था। परन्तु दरियाव सिंह के परिवार में बहुत पहले से ही अंग्रेजी सत्ता के विरोध में खुलकर चर्चा होती रहती थी। दरियाव सिंह इस पर परामर्श करने के लिये अपने पड़ोसी तालुकेदार डौंडियाखेड़ा के राव राम बख्श सिंह एवं शंकरपुर के राना बेनी माधव सिंह के पास जून के प्रथम सप्ताह में गये हुये थे। जब कानपुर और इलाहाबाद में क्रौंति भड़की, तब वे खागा में नहीं थे। परन्तु उनका परिवार, जो मानसिक रूप से क्रौंति के लिये पहले से तैयार था, उनकी अनुपस्थिति में 8 जून 1857 दिन सोमवार को उनके ज्येष्ठ पुत्र सुजान सिंह की अगुवाई में तहसील खागा के भवन और खजाने पर हमला करके अधिकार कर लिया और अपना स्वतंत्रता का झंडा फहरा दिया। इनका साथ दिया इलाहाबाद से आये दो सौ क्रौंतिकारी घुड़सवारों और पड़ोसी गाँवों की जनता ने, सभी कंधा से कंधा मिलाकर सरकारी कार्यालयों और अंग्रेजी अफसरों– इंजीनियरों के बंगले फूंक दिये। तहसीलदार पंडित रामनारायण अपने अमले के साथ भाग गये, जो बचे और विरोध किया वे मारे गये। इसका आँखों देखा हाल देवी प्रसाद कायस्थ उम्र 42 वर्ष, साकिन इलाहाबाद खागा तहसील के वासिल बाकी नवीस ने 7 फरवरी 1858 को सरकार बनाम दरियाव सिंह के मुकदमे में गवाही देते हुये बताया कि **"तारीख 8 जून 1857 बवक्त 10 बजे दिन, करीब दो सौ सवार खागा में आकर मुकीम हुये और बंगला साहबान सड़क आहिमी का फूँक दिया। उनका असबाब सुजान सिंह के पास ले–लेकर जाते थे... फिर करीब चार–पाँच सौ आदमी साकिनाने बुदुवन, ऐलई, सरसई पास सुजानसिंह के जमा होकर तरफ तहसीलदारी आये।"[3]** इस भाँति सुजान सिंह की देख रेख में सरकारी खजाने तथा तहसील पर पूरा अधिकार हो गया।

फतेहपुर कचेहरी, 9 जून 1857, दिन मंगलवारः–

सुजान सिंह ने खागा तहसील पर कब्जा करने के बाद रात में ही अपने विश्वस्त सवारों को जिले के अन्य क्रौंतिकारियों को 9 जून की प्रातः फतेहपुर कचेहरी पर कब्जा करने के लिये बुलावा भेजा। वे स्वयं अपने परिवार के सदस्यों, इलाहाबाद से आये

1. फारेस्ट, स्टेट पेपर्स, 1857–58 (लंदन 1993) खण्ड–दो, पृष्ठ 37
2. जे0डब्लू0के0, सिपायवार, इन इंडिया, भाग–तीन, पृष्ठ 457
3. सरकार बनाम दरियाव सिंह वगैरह, मुकदमा संख्या 4/1858 की कार्यवाही

आये लोग सहायता करेंगे। उनके कुछ साथी, जो बरामदा में रूके थे, उनमें यह जानने की बड़ी उत्सुकता थी कि वहाँ मेरी कितनी रक्षक सेना है और कितने शस्त्रों की व्यवस्था है। हिकमत उल्ला बड़ी मित्रता से सद्भावना प्रगट करके अपने साथियों के साथ वापस चले गये।"[1] क्रांतिकारियों ने उस दिन की कार्यवाही स्थगित करके गाँवों में विश्राम करने चले गये और दूसरे दिन 10 जून को हमला करने की योजना बनाई गई।

अंग्रेजों का पलायनः—

कलेक्टर जे0डब्लू0 शेरर ने लिखा है कि "केवल मि0 टक्कर को छोड़कर हम सभी इस नतीजे पर पहुँचे कि इस परिस्थिति में कुछ समय के लिये यहाँ से चले जाने के अलावा कोई अन्य रास्ता नहीं है। परन्तु जाया कहाँ जाये क्योंकि कानपुर, इलाहाबाद और पड़ोसी जिला सलोन (रायबरेली) में पहले से क्रांति हो चुकी थी। अब केवल बांदा ही बचा था, जहाँ अभी क्रांति नहीं हुई थी। जैसे ही क्रांतिकारी रात्रि विश्राम के लिये चले गये, हम सब घोड़ों पर सवार होकर जमुना नदी की ओर पलायन कर गये और रात में ही ललौली घाट से नदी पार करके बांदा पहुँच गये।"[2]

फतेहपुर शहर 10 जून, बुधवारः—

9 जून की रात में ही सभी अंग्रेज अफसर बांदा भाग गये, परन्तु जिला जज रॉबर्ट टक्कर नहीं गये। उनकी कलेक्टर शेरर से अच्छी नहीं पटती थी , दूसरे उनकी पत्नी यहां नहीं थी, आगरा में थी। वह यहीं रूक कर क्रांतिकारियों का सामाना करना चाहते थे, परन्तु सबके चले जाने से वे अकेले पड़ गये, इसलिये वह रात ही में अपने मित्र एव हितैषी ग्राम कोरई के बड़े जमीनदार बाबा गयादीन दुबे के पास सहायता माँगने पहुँचे, बाबा से सहायता का आश्वासन पाकर वे रात ही में लौट आये। बाबा प्रातः आपने सैनिकों के साथ आये, मगर यहाँ का नजारा देखकर वे क्रांतिकारियों के साथ हो गये। क्रांतिकारियो का जनसमूह सुजान सिंह के नेतृत्व में पहले जेल पहुँचकर कैदियों को छुड़ाकर अपने साथ लेकर खजाने और कचेहरी पहुँचकर कब्जा कर लिया और कचेहरी पर विजय ध्वज फहरा दिया। जिला जज टक्कर अपने बचे खुचे सैनिको के साथ कड़ी टक्कर देता रहा, वह खजाने की छत पर चढ़कर मोर्चा सम्भालकर क्रांतिकारी समूह पर गोलिया चलाता रहा। परन्तु अंत में अपनी पराजय देखकर गोली मारकर आत्म हत्या कर ली, उसने मरने से पहले झंडा फहराने वाले गुम्बज पर 'बाबा गयादीन दुबे विश्वासघाती है' लिख दिया। इसी आधार पर बाद में बाबा पकड़े गये और उनको फाँसी की सजा दी गई, परन्तु उन्होंने जेल में आत्महत्या कर ली।

इस प्रकार खागा और फतेहपुर दोनों स्वतंत्र हो गये, अंग्रेजी सत्ता समाप्त हो गई, क्रांतिकारियों का पूरे जिले में अधिकार हो गया। इसकी सूचना कानपुर–बिठूर

1. फ्रीडम स्ट्रगिल इन यू0पी0 खण्ड चार, सूचना विभाग उ0प्र0 (1958 ई0), पृष्ठ 562–63
2. म्यूटिनी नरेटिव, नार्थ वेस्ट प्राविन्सेस, आगरा, जिला फतेहपुर, पृष्ठ 3–5

हुये दो सौ क्रौंतिकारी घुड़सवारों और पास–पड़ोस के गाँवों की उत्साही जनता को लेकर प्रातः सूर्योदय के पूर्व फतेहपुर पहुँच गये। उधर आमंत्रण पाकर जमरावा के ठाकुर शिवदयाल सिंह और अटैया रसूलपुर के ठाकुर जोधा सिंह भी अपने सैनिकों और साथियों सहित आ गये। सब एकजुट होकर खजाने की ओर कूच किया। जिसका वर्णन फतेहपुर के तत्कालीन कलेक्टर जे0 डब्लू0 शेरर ने इस प्रकार किया है कि "9 जून मंगलवार को लगभग प्रातः 8 बजे शहर में एक जनसमूह बड़े जोश के साथ खजाने की ओर कूच किया, जहाँ गार्डों ने हथियार तान दिये, उनके सूबेदार ने घोषणा की यदि खजाने को लूटने का कोई प्रयास हुआ, तो गोली चला दी जायेगी। तब जनसमूह जेल की ओर मुड़ गया, जहाँ जेल के गार्डों ने भी रोक दिया। इसके बाद जनसमूह मिशन भवन की प्रेस बटेरियन सोसाइटी के कार्यालय पहुँच कर आग लगाकर वहाँ की सम्पति उठा लाया।"[1] क्रौंतिकारियों ने डाक बंगला, अंग्रेज अफसरों तथा रेलवे इजीनियरों के बगलों को फूंक कर सरकारी कार्यालयों में आग लगाकर स्वाहा कर दिया। अंग्रेज अफसर अपने परिवारों के साथ इधर–उधर भागकर छिपकर अपनी जाने बचाई।

खागा और फतेहपुर की सूचना आग की तरह चारों ओर फैल गई। गाँवों की जनता अपने–अपने हथियार जो भी उनके पास थे, लेकर झुंड के झुंड फतेहपुर पहुँचने लगी और क्रौंतिकारियों का साथ देने लगी, जिनको रोकने के लिये अंग्रेज जी–जान से जुट गये और उनको तितर–बितर करने का प्रसार करने लगे मगर उन्हें सफलता नहीं मिल पा रही थी। वे जैसे एक स्थान को खाली कराके दूसरी ओर जाते तैसे ही हजारों का झुंड फिर वहीं एकत्र हो जाता था। "इस जनसमूह को रोकने के लिये जिला जज मिस्टर टक्कर अपने कुछ सवारों के साथ शहर के दूसरे छोर पर डटे हुये थे।"[2]

क्रौंतिकारी नेताओं ने दिन में दो बजे कार्यवाही रोककर अंग्रेजों के कट्टर विरोधी डिप्टी कलेक्टर हिकमत उल्ला खाँ से मिलकर उनकी सहायता और सहयोगा माँगा। उन्होंने देश प्रेम की भावना से प्रेरित होकर उनका अनुरोध स्वीकार करके स्थानीय पठानों और मुसलमानों का भी साथ लेने का आश्वासन दिया। कलेक्टर जे0डब्लू0 शेरन ने लिखा कि "वे (हिकमत उल्ला खाँ) सायं चार बजे शस्त्रधारी पठान तथा अन्य मुसलमानों के साथ मेरे निवास पर आये। मैंने उनको अकेले बुलाया और भीड़ को बाहर छोड़ आने का अनुरोध किया। परन्तु इस पर ध्यान न देकर थोड़ी देर में पूरा परिसर शस्त्रधारी भीड से भर गया। हिकमत उल्ला खाँ को तीन–चार क्रौंतिकारी नेताओं के साथ मेरे पास लाया गया। मैंने आने का कारण पूछा उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे शहर की आराजकता से बचाने में साथ में

---

1. फ्रीडम स्ट्रगिल इन यू0पी0 खण्ड चार, सूचना विभाग उ0प्र0 (1958 ई0), पृष्ठ 561
2. फ्रीडम स्ट्रगिल इन यू0पी0 खण्ड चार, सूचना विभाग उ0प्र0 (1958 ई0), पृष्ठ 561

नाना साहब के पास पहुँची, उन्होंने हिकमत उल्ला को जनपद का प्रशासक बनाकर चकलेदार नियुक्त कर दिया।"[1] अब कानपुर से लेकर इलाहाबाद तक का इलाका अंग्रेजी सत्ता से मुक्त हो गया था।

अंग्रेजों का पलटवार:–

अंग्रेजों के लिये माह जून 1857 अभिशाप बन गया, लखनऊ उन्नाव, कानपुर, फतेहपुर और इलाहाबाद जिलों के साथ सम्पूर्ण अवध और बुन्देलखण्ड सुलग उठा और एक–एक करके सभी जिलों से उनकी सत्ता मिट गई। अंग्रेजों में इसकी प्रतिक्रिया हुई, वे सजग हुये और अपने धुरंधर जनरलों और बिग्रेडियरों को बुलाकर पुनः अधिकार करने के लिये जुटा दिया। सबसे पहले जनरल नील 11 जून को इलाहाबाद पहुँचकर किले पर कब्जा कर लिया। "[2] उसने मेजर रिनार्ड को फतेहपुर और कानपुर पर कब्जा करने का आदेश दिया। वह इलाहाबाद से 27 जून को चला, रास्ते के गाँवों को फूंकता हुआ निरीह जनता को संगीनों से भोंकता हुआ, 5 जुलाई को खागा से 5 कि0मी0 पहले कटोघन में पहुँचकर पड़ाव डाला। 11 जुलाई को मेजर रिनार्ड ने एकाएक खागा पर हमला कर दिया, जहाँ दरियाव सिंह एवं सुजान सिंह उसे कड़ी टक्कर दी, वह पराजित होकर लौट आया।"[3] उधर कानपुर के नाना साहब को जब रिनार्ड के आगे बढ़ने की सूचना प्राप्त हुई, तब उन्होंने अपनी सेना को उसको रोकने के लिये भेज दिया, जो फतेहपुर के पास बिलन्दा में रुकी हुई थी। दरियाव सिंह रिनार्ड को खदेड़कर खागा से बिलन्दा नाना साहब की सेना के पास चले आये। इसकी सूचना पाते ही मेजर रिनार्ड ने उसी दिन फिर से खागा पर आक्रमण करके गढ़ी, महल और जनता के घरों को गिरा कर बर्बाद कर दिया और निरीह जनता को मार–मार कर खागा को श्मशान बना दिया।

फतेहपुर की विजय:–

जनरल हैबलाक 10 जुलाई को इलाहाबाद से चलकर 11 जुलाई की रात में खागा पहुँचा, वहाँ उसे सब वीरान मिला। वहाँ से वह रिनार्ड की सेना से मिलने के लिये आगे बढ़ा और रात ही में एक बजे बिलंदा पहुँच गया। दोनों सेनायें बिलन्दा में मिल गई। फतेहपुर यहाँ से 8 किमी0 दूर था। बरसात का मौसम था, सड़क की दोनों किनारे पानी भरा हुआ था। हैवलाक एक दिन विश्राम करना चाहता था। मगर क्रौतिकारियों की सेना ने जिसमें नाना साहब की 3500 पैदल सेना के साथ घुड़सवार सेना और 12 तोपे थीं।"[4] एकाएक अंग्रेजी सेना पर प्रातः हमला बोल दिया। पहले अंग्रेजी सेना शान्त रही, क्रौतिकारियों को अंग्रेजी सेना की सही स्थिति ज्ञात नहीं थी। इसलिये इनका हमला बेकार हो गया और उनका गोला बारूद समाप्त हो गया, तब

1. फ्रीडम स्ट्रगिल इन यू0पी0 खण्ड चार, सूचना विभाग उ0प्र0 (1958 ई0), पृष्ठ 563
2. फ्रीडम स्ट्रगिल इन यू0पी0 खण्ड चार, सूचना विभाग उ0प्र0 (1958 ई0), पृष्ठ 667
3. फ्रीडम स्ट्रगिल इन यू0पी0 खण्ड चार, सूचना विभाग उ0प्र0 (1958 ई0), पृष्ठ 724–25
4. जे0सी0 पोलक, वे टू ग्लोरी, लाइफ ऑफ हैवलाक (1957 ई0), पृष्ठ 165

अंग्रेजी सेना ने इन पर खुले मैदान में जोरदार आक्रमण किर दिया। भयंकर युद्ध हुआ। इस भयंकर युद्ध का वर्णन एक अंग्रेज अधिकारी ने किया है कि "मैने अपने जीवन में इतना कड़ा संघर्ष नहीं देखा है।"[1] 12 जुलाई दिन रविवार को यह युद्ध प्राप्त 8 बजे से सायं 5 बजे तक हुआ। अंग्रेजी सेना बिजय प्राप्त करके फतेहपुर में प्रवेश कर गई। क्रांतिकारी सेना वापस चली गयी। अंग्रेजों का पुनः फतेहपुर पर कब्जा हो गया। उन्होंने शहर को जी भरकर लूटा और आग लगा दी।

औंग का युद्ध 15 जुलाई 1857 :–

यह युद्ध नाना साहब के बड़े भाई बालाराव से हैवलाक और रिनार्ड की संयुक्त सेना से हुआ, इसमें रिनार्ड की जांघ में गोली लगी और सैकड़ों सैनिक मारे गये। रिनार्ड 3 दिन बाद मर गया।"[2] इसके बाद 17 जुलाई को कानपुर पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया। क्रांतिकारी तितर–बितर हो गये। दरियाव सिंह तथा उनके साथियों ने वहाँ से आकर गुरिल्ला युद्ध प्रारम्भ कर दिया।

जनपद के बाहर दो जिलों में युद्ध:–

(1) जिला इलाहाबाद के जंगल में भीतर में राना बेनी माधव सिंह के साथ जाकर पड़ाव डाला। अंग्रेजी सेना द्वारा घेराबंदी करने पर अंग्रेजी सेना की नौकरी छोड़ने वाले बिगुल बादक सत्तीदीन मेहतर ने सेना को तितर–बितर करने वाली धुन बजाकर अंग्रेजी सेना को वापस लौटा दिया। दरियाव सिंह राना के साथ अवध चले गये।

(2) दरियाव सिंह ने दिसम्बर 1857 में अपने परिवार के सदस्यों के साथ बादा के चित्रकूट की हनुमान धारा पहाड़ी पर जाकर पड़ाव डाला। यहाँ अंग्रेजी सेना की घेराबंदी के बाद युद्ध हुआ, जिसमें इनके परिवार के बहादुर सिंह एवं अवधूत सिंह वीरगति को प्राप्त हुये।

गिरफ्तारी:–

4 फरवरी 1858 को रात्रि में एक गद्दार मुखबिर की सूचना देने पर अंग्रेजो ने खाना खाते समय दरियाव सिंह के साथ सुजान सिंह, निर्मल सिंह, रघुनाथ सिंह, तुरंग सिंह और बख्तावर सिंह को गिरफ्तार कर लिया।

फाँसी दी गई:–

केवल 32 दिन में मुकदमें की कार्यवाही पूर्ण करके उपरोक्त क्रांतिकारियों को 6 मार्च 1858 को फाँसी पर लटका दिया गया।"[3] मगर दरियाव सिंह अपने परिवार के साथ शहीद होकर 1857 के दहकते अंगारे बन गये। खागा के कवि श्री बृजमोहन पांडेय विनीत ने उनके सम्बन्ध में सही लिखा है कि :

खागा के दरियाव लिख गये जो बलिदानी गाथा।
उनकी याद जब भी आती बरबस झुक जाता माथा।।

1. फ्रीडम स्ट्रगिल इन यू०पी० खण्ड चार, सूचना विभाग उ०प्र० (1958 ई०), पृष्ठ 728
2. वही, पृष्ठ 717,
3. जिला गजेटियर फतेहपुर, 1980, पृष्ठ 260